महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का यादव अहीर समाज के स्नेह सम्मेलन में भाषण

स्थान :- इंदौर दिनांक :- 22 जनवरी, 2012 समय :- एक बजे दोपहर

मैं आज के इस स्नेह सम्मेलन में शामिल होकर बहुत प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूं तथा अपने आप को गोरवान्वित महसूस कर रहा हूं।

दुनिया हमेशा कर्म में विश्वास करने वालों को ही याद रखती है। यादव अहीर समाज के कर्मयोगियों ने देश की तरक्की और खुशहाली में जो योगदान दिया है वह अनुकरणीय है। यह समाज सरल,सौम्य, मिलनसार,साहसी और आपसी सौहाद्र का प्रतीक है।

यादव वंश भारतीय इतिहास में बहुत प्राचीन है। उसका सम्बन्ध यदुवंशी क्षत्रियों से माना जाता है। यदुवंशियों की वीरता सीना गर्व से चौड़ा कर देती है। राष्ट्रकूटों और चालुक्यों के उत्कर्ष काल में यादव वंश के राजा अधीनस्थ सामन्त राजाओं की स्थिति रखते थे। यादव समाज ने देश के सभी क्षेत्रों में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त किया है। प्रशासनिक, चिकित्सा, समाजसेवा और राजनीति में भी यादव समाज का उल्लेखनीय योगदान है। यादव इतिहास जांबाजों की वीरताओं से भरा पड़ा है। यदुवंश के गौरवशाली इतिहास से युवा पीढ़ी को महापुरूषों के व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए। इतिहास का अध्ययन करने से समाज में एकता मजबूत होगी और आपसी सामन्जस्य एवं स्नेह का वातावरण सुदृढ़ होगा।

सादा जीवन और आपसी सहयोग का इनका सिद्धांत अनुकरणीय उदाहरण है। वैसे इस समाज के लोग अब हर क्षेत्र में अन्य नागरिकों की तरह देश सेवा में लगे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी यादव समाज बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है।

यादव अहीर समाज को बधाई देता हूँ कि उन्होंने स्नेह सम्मेलन आयोजित कर समाज में प्रेम, भाईचारा और सौहाद्र्र का वातावरण मजबूत करने का सराहनीय कदम उठाया है। ऐसे सम्मेलन अन्य समाजों द्वारा भी आयोजित किये जा रहे हैं। यह एक क्रांतिकारी बदलाव है जिसका सभी को स्वागत करना चाहिए।

मेरा आप से तथा समाज के अन्य वर्गों से अनुरोध है कि दहेज की कुरीति को मिटाने के लिए पूरी शिद्दत और मजबूत इच्छा शक्ति के साथ अभियान चलायें। यह दुर्भाग्य की बात है कि हमारे देश में अभी भी दहेज का दानव हमारी बेटियों की बलि ले रहा है। उन्हें फ्रिज, रंगीन टीवी और मोटर गाड़ियों के लिए जलाया जा रहा है । किसी भी सभ्य समाज में समाज को इन कुरीतियों को बर्दाश्त नहीं करना चाहिए। हमारी बेटियों के साथ ऐसा सलूक करने वाले दहेज लोभियों को फांसी पर लटकाया जाए तो यह भी कम सजा होगी।

मेरा सभी वर्गों से आग्रह है कि वे विवाहों में फिजूलखर्जी, धार्मिक आडम्बरों और जांत-पांत के भेदभाव जैसी कुरीतियों के विरूद्ध भी जन-जागृति पैदा करें।

जयहिन्द।